प्रेस विज्ञप्ति

मृद पेय (सॉफ्ट ड्रिंक्स) हैं अभी भी खतरनाक

- ऐसा दावा करती है सेंटर फॉर साईन्स एण्ड एन्वायरन्मेंट (सीएसई) की 2006 की नई देशव्यापी खोज।
- 2003 में सीएसई ने दिल्ली में बेचे जा रहे मृद पेयों में कीटनाशकों के होने की खबर दी थी। तब से अब तक स्थिति में कोई सुधार नहीं है।
- संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) ने मृद पेयों के लिए मानकों की मांग की थी। भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) ने मानक निर्धारण तो किए, मगर उन्हें आज तक अधिसूचित नहीं किया।
- इससे साफ झलकता है कि हमारे नियन्त्रकों — केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय — के लिए जनसाधारण व हमारे बच्चों का स्वास्थ्य कोई महत्त्व नहीं रखता।

नई दिल्ली अगस्त 2, 2006: तीन साल पहले सीएसई ने कीटनाशकों से लैस मृद पेयों पर अपनी खोज का खुलासा किया था। सीएसई की एक नई देशव्यापी खोज बता रही है कि पिछले तीन सालों में कुछ भी नहीं बदला है। मृद पेय अब भी खतरनाक और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं और जनस्वास्थ्य को अब भी जोखिम में डाला जा रहा है।

और बुरी बात तो यह है कि जेपीसी के निर्देशों की भी उपेक्षा की जा रही है: सुरक्षा के मानकों का निर्धारण किया गया है, मगर उद्योगों के द्वारा किए गये विरोध के कारण यह लागू नहीं किए गये हैं। ऐसा लगता है जैसे हमारे स्वास्थ्य की चिंता किसी को नहीं है — यह इस अध्ययन का कहना है।

इस नई खोज में 11 मृद पेय ब्रान्डों के 57 नमूनों की जाँच की गई है। ये नमूने देश के 12 राज्यों में स्थित कोका-कोला और पेप्सीको के 25 अलग-अलग उत्पादन केन्द्रों से संग्रह किए गए थे। जाँच के दौरान सभी नमूनों में — एक बार फिर — कीटनाशकों की भयावह उपस्थिति उभर कर सामने आई है। सभी नमूनों में ये कीटनाशक बीआईएस मानकों (जिन्हें अभी तक अधिसूचित नहीं किया गया है) से 22-25 गुना अधिक मात्रा में पाए गए हैं।

कुछ नमूनों में लिन्डेन की मात्रा — जैसे कि कोलकाता में खरीदे गए कोका-कोला — बीआईएस मानकों से 140 गुना अधिक पाया गया है। इसी तरह, थाणे में बना एक कोका-कोला के नमूने में बीआईएस मानकों से 200 गुना अधिक मात्रा में क्लोरपाईरीफोस मिला है। ''यह हमें बिलकुल मंजूर नहीं, क्योंकि हम जानते हैं कि कीटनाशक अतिक्षुद्र जहरीले पदार्थ हैं और हमारे शरीर पर उनका प्रभाव एक लम्बे अर्से के दौरान पड़ता है,'' सुनीता नारायण, निदेशक, सीएसई कहती है।

यह नई शोध सीएसई के पोल्युशन मॉनीटरिंग लैबोरेटरी में ही की गई, जहाँ 2003 में भी नमूनों की जाँच की गई थी। उन दिनों मृद पेय बनाने वाली कम्पनियों ने सीएसई के शोध की कड़ी चर्चा की थी और लैबोरेटरी पर भी उगलियाँ उठाई थी। मगर जेपीसी की रिपोर्ट ने इन सभी का बहिष्कार किया था। जेपीसी ने 2003 के सीएसई के शोध और उसकी प्रणाली का समर्थन किया था। इस बार, सीएसई ने लैबोरेटरी में कई सुधारों का प्रर्वतन किया है। लैबोरेटरी को आईएसओ 9001:2000 गुणवत्ता प्रबन्धन प्रणाली की मानयता प्राप्त हो चुकी है। इसके अलावा लैबोरेटरी ने कीटनाशकों पर शोध एक आधुनिकतम मशीन — जीएस–एमएस — द्वारा किया है। ''हमने जेपीसी के निर्देशों का पूर्ण रूप से पालन किया है और अपनी शोध के विषय में पूरी तरह से आश्वस्त हैं,'' ऐसा कहते हैं चन्द्रभूषण, जो सीएसई में संयुक्त निदेशक हैं।

2003 में, दिल्ली से लिए गए नमूनों में कीटनाशक अवशेषों का औसत स्तर बीआईएस मानकों से 34 गुना अधिक था। परन्तु इसे हम बहुत कम घटाव भी नहीं कह सकते, क्योंकि इस बार सीएसई को कोलकाता से ली गई बोतलों में 52 गुना अधिक व नैनीताल और गोरखपुर से ली गई बोतलों में 42 गुना अधिक कीटनाशक अवशेष मिले हैं। उसी तरह, मुम्बई में खरीदी गई बोतलें, जो थाणे व नागपुर में निर्मित हैं, में बीआईएस के मानकों से 34 गुना अधिक कीटनाशक मिला है।

आंकड़ों का खेल

''सुरक्षा कम या ज्यादा आंकड़ों से नहीं नापी जाती,'' नारायण समझाती हैं। कम्पनियों का कहना है उनके उत्पाद सुरक्षित हैं क्योंकि उनमें कीटनाशक अन्य उत्पाद, जैसे दूध व फलों का रस, की तुलना में कम हैं। परन्तु यह सिर्फ एक वैज्ञानिक खेल है। कीटनाशक बहुत छोटे जीव–विष होते हैं जो हमारे लिए बहुत ही खतरनाक साबित हो सकते हैं — अगर हम उनकी स्वीकार्य मात्रा से अधिक ग्रहण करते हैं तो। दूसरे शब्दों में, खाद्य वस्तु के जरिए जो प्रभाव हम पर पड़ता है, वह सुरक्षा की दहलीज के पार नही होना चाहिए। यह सुरक्षा की दहलीज — या मानक — पोषण–कीटनाशक के अदला–बदली को ध्यान में रखते हुए तय किया जाता है। पोषक खाद्य द्रव्यों में कीटनाशकों के सामान्य अवशेष स्वीकार्य हो सकते हैं, मगर कार्बोनेट किए गये कुपोषक पेय द्रव्यों में नहीं। इसलिए, अपने 2003 के शोध में भी, सीएसई ने मृद पेय में कीटनाशकों के अवशेषों के सुरक्षित मात्रा के मानकों की मांग की थी।

''यह एक गम्भीर जनस्वास्थ्य से संबन्धित अपवाद और कलंक है,'' नारायण कहती हैं। जेपीसी ने फरवरी 2004 में सरकार को मानक स्थिर करने का निर्देश दिया था। उस समय से अब तक, बीआईएस ने बीसियों बार बैठक और विचार–विमर्श किया। अक्टुबर 2005 में आखिरकार मानकों का निर्धारण किया गया। मार्च 2006 में समिति ने मानकों को पुन: स्वीकृति दी। मगर तब से मामला आगे नहीं बढ़ा है: मानक निर्धारित तो किए गए हैं, पर अधिसूचित नहीं।

निर्णायक मानकों का विरोध कर रही है केन्द्रिय स्वास्थ्य मंत्रालय, जिसका मानना है कि अभी और शोध किया जाना चाहिए। मंत्रालय ने पिछले तीन सालों में इस शोधकार्य के लिए कई समितियों का गठन किया, परन्तु उसका कोई निष्कर्ष नहीं निकला। ''हम जानते हैं कि मृदपेय बनाने वाली कम्पनियाँ मानकों का विरोध कर रही हैं क्योंकि वे अपने आपको देश के नियमों के परे मानती हैं,'' सीएसई का कहना है।

यह एक जन स्वास्थ्य का मामला है, इसलिए, इसपर कोई समझौता नहीं हो सकता। हमारी माँग बड़ी सरल है: सरकार को उत्पाद के निर्णायक मानक अधिसूचित करने होंगे, और इन मानाकों को मृदपेय के लिए अनिवार्य बनाना होगा। इस विषय में और विलम्ब हम नहीं सहन करेंगे। हमें सुरक्षा चाहिए — यही हमारी प्रमुख मांग है।

सम्पूर्ण डाऊन टु अर्थ कहानी, सीएसई प्रयोगशाला की रिपोर्ट, पत्रकार सम्मेलन का प्रस्तुतीकरण, विज्ञप्ति तथा सम्बंधित दस्तावेजों के लिए देखें: http://www.cseindia.org/misc/cola-indepth/cola2006/cola-index.htm

अपने प्रश्नों के लिए सुपर्णो बनर्जी अथवा शचि वतुर्वेदी से souparno@cseindia.org, या shachi@cseindia.org पर सम्पर्क करें या मोबाइल 9810098142 पर बात करें।

2006 के सीएसई के खोज के कुछ प्रमुख केन्द्रबिन्दु
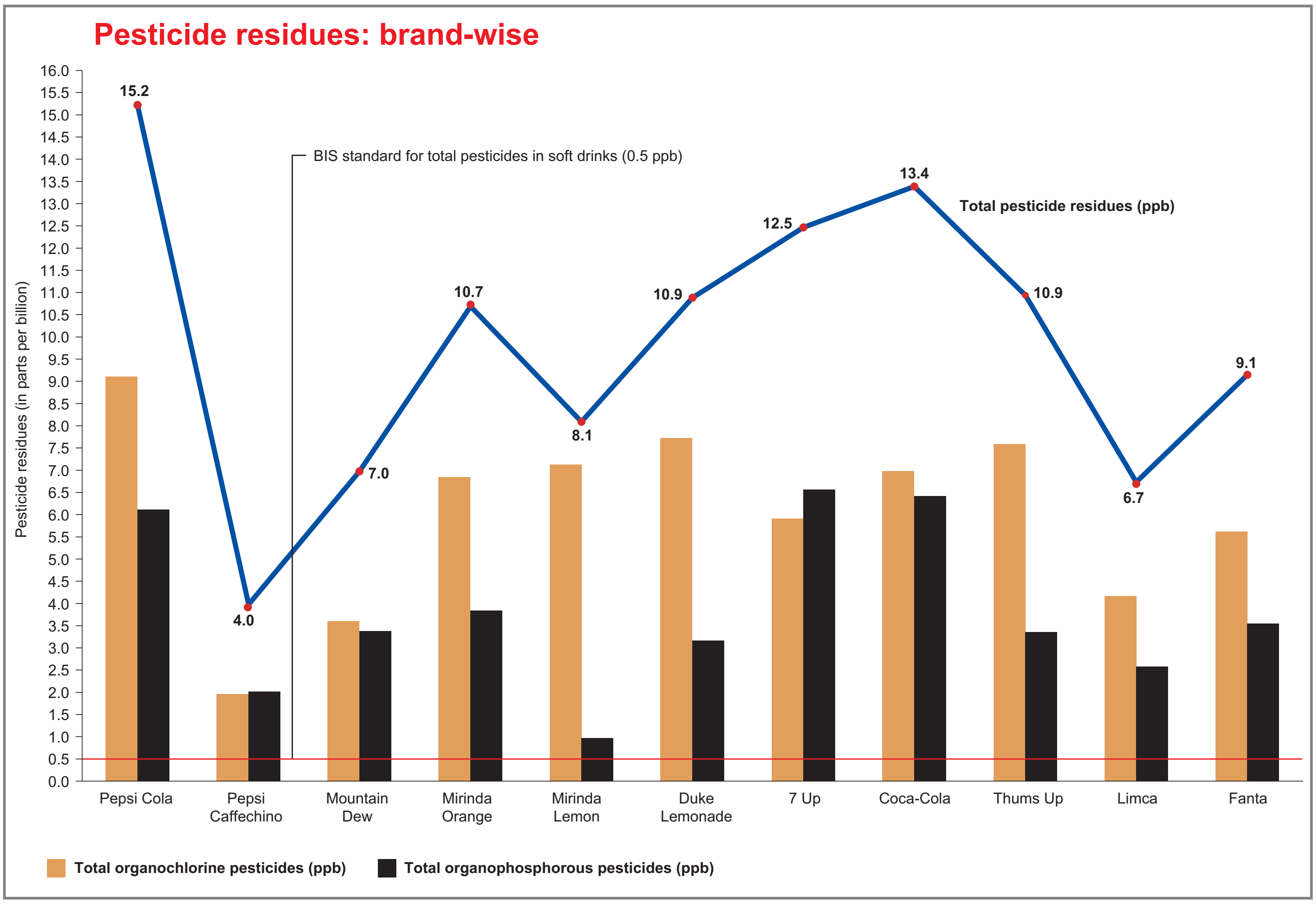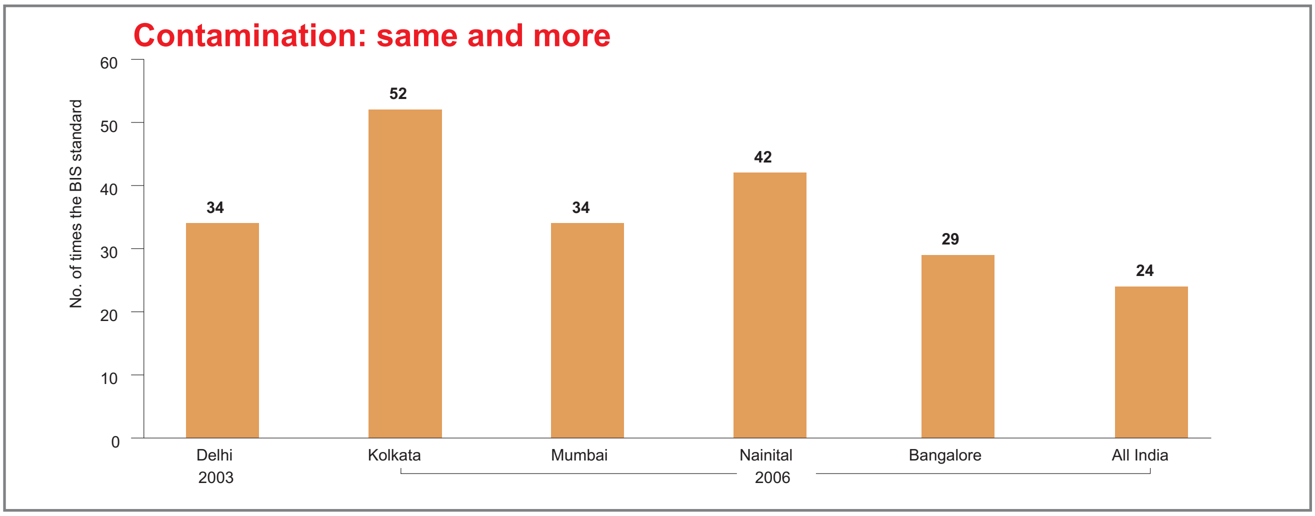
- सभी नमूनों में 3–6 कीटनाशकों का मिश्रण।
- लिन्डेन (जो एक प्रमाणित कैन्सर्जन है) की मात्रा बीआईएस मानकों से 54 गुना अधिक; कोलकाता से लिए गए कोका कोला के एक नमूने में लिन्डेन की मात्रा 140 गुना अधिक पाई गयी।
- क्लोरपाईरीफोस (जो एक प्रमाणित तान्त्रिकीय विष है) की मात्रा 47 गुना अधिक; मुम्बई से लिए गए कोका–कोला के एक नमूने में क्लोरपाईटीफोस की मात्रा 200 गुना अधिक पाई गयी।
- भारत में प्रतिबन्धित हैप्टाक्लोर, 71 प्रतिशत नमूनों में पाया गया, बीआईएस मानकों से 4 गुना अधिक मात्रा में।
- सभी नमूनों में, कीटनाशक अवशेषों की औसत मात्रा 11.85 पार्ट्स पर बिलियन (पीपीबी) पाई गई – मृद पेय में कीटनाशकों की कुल मात्रा के लिए बनाए गए बीआईएस मानक (0.5 पीपीबी) से 23 गुना अधिक।
- औसतन, पेपसीकोला में 30 गुना अधिक कीटनाशक अवशेष पाए गए।
- कोका कोला में, औसतन, 27 गुना अधिक कीटनाशक अवशेष।